पी.एच. डी. शोध - प्रवेश परीक्षा

भारतीय वाद्य-संगीत

पूर्णांक 50

इकाई 1 (अ) निम्नलिखित का सामान्य अध्ययन :- नाद, श्रुति, स्वर, थाट, सप्तक राग, रागजाति, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्ण, वर्ज्य स्वर, वक्र स्वर, अल्पदर्शक स्वर, पूर्व राग, उत्तर राग, आश्रय राग, संधिप्रकाश राग, शुद्ध, छायालग, एवं संकीर्ण राग, परमेल प्रवेशक राग, आलाप, तान, आविर्भाव - तिरोभाव, मींड, कृन्तन, सूत, आकर्ष, अपकर्ष, घसीट, झमझमा, मुर्की, गिटकरी, झाला

(ब) भारतीय संगीत की निम्न शैलियों का अध्ययन :- ध्रुवपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, चतुरंग, त्रिवट, मसीतखानी, रजाखानी, रवीन्द्र संगीत, शास्त्रीय नृत्य के प्रकारों का अध्ययन

इकाई 2 (अ) भारतीय संगीत का इतिहास - संगीत की उत्पत्ति की अवधारणायें एवं भारतीय संगीत का सम्पूर्ण इतिहास

(ब) राग एवं स्वर सप्तक का विकास :- ग्राम की परिभाषा एवं उसके प्रकारों की सम्पूर्ण जानकारी, मूर्छना एवं उसके प्रकार, भारतीय स्वर सप्तक का अध्ययन एवं ग्राम राग वर्गीकरण, रागरागिनी वर्गीकरण, थाट राग वर्गीकरण, रागांग वर्गीकरण।

इकाई 3 (अ) वाद्य वर्गीकरण एवं वाद्यों का विकास तत, घन, सुषिर, अवनद्ध वाद्यों का विकास, वैदिक कालीन वाद्य, भरतकालीन वाद्य, मध्ययुगीन वाद्यों की जानकारी

(ब) उत्तर भारतीय वाद्य संगीत के घराने एवं वादकों का जीवन परिचय :- वाद्य संगीत के घरानों का विस्तृत अध्ययन, उ. अलाउद्दीन खाँ, उ. विलायत खाँ, पं. रविशंकर, पं. ज्ञानमणि मिश्र, उ. बिस्मिल्लाह खाँ, पं. वी. जी. जोग, उ. अमजद अली खाँ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, उ. अल्लारक्खा खाँ, पं. सामता प्रसाद, पं. निखिल बेनर्जी, डा. एन. राजम।

इकाई 4 (अ) रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय :- हंसध्वनि, मधुवंती, मालकौंस, चन्द्रकौंस, जोगकौंस, बिलासखानी तोड़ी, गुर्जरी तोड़ी, भूपाल तोड़ी, अहीर भैरव, बैरागी भैरव, बागेश्री, रागेश्री, मारुबिहाग, श्याम कल्याण, यमनी बिलावल, देवगिरी बिलावल।

(व) ताल का अध्ययन एवं लयकारियाँ :- त्रिताल, तिलवाड़ा, एकताल, चारताल, झपताल, सूल ताल, रूपक, तीव्रा, आड़ा-चारताल, धमार, झूमरा, दीपचंदी, कहरवा, झूमाली, शिखरताल, गजझम्पा ताल, मत्तताल।

5 (अ) **भारतीय संगीत के ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का परिचय** :- महर्षि भरत, (नाट्यशास्त्र) पं. शारंगदेव (संगीत रत्नाकर) पं. अहोबल (संगीत पारिजात) मतंग (बृहद्देशी) पं. लोचन (रागतरंगिणी) व्यंकटमखी (चतुर्दण्डि प्रकाशिका) पं. रामामात्य (स्वर मेल कलानिधि) आचार्य कैलाशचन्द्र देव बृहस्पति (भरत का संगीत सिद्धान्त)

(ब) **पाश्चात्य संगीत एवं ध्वनि शास्त्र** :- पाश्चात्य संगीत की स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन एवं सांगीतिक, असांगीतिक ध्वनि, तारता, तीव्रता, गुण, आवृत्ति, आन्दोलन, ध्वनि का परावर्तन, ध्वनि आवर्तन, ध्वनि विवर्तन, ध्वनि का व्यतिकरण

= o =

[illegible] 27.9.16

V. Verma 27.9.16

[illegible] 27/9/2016

S. Khandalkar. 27th Sep 16

S. Harm
DR. S. Harmalkar
27.9.2016